उपसभापति : श्री राम अवधेश जी, अब आपका स्पेशल मेंशन है।

श्री राम अवधेश सिंह (बिहार) : महोदया, अपने स्पेशल मेंशन पर बोलने के पहले मैं श्री ईश दत्त यादव जी के समर्थन में बोल कर एक सबूत देना चाहता हूं। कल सरकार ने हम लोगों को डिस्पेंसरी से दवा दी है उस दवा के बीच से एक टेबलट गायब है यह बाहर से बंद है, खुली नहीं है जिसे मैं टेबल पर रखना चाहता हूं। इसकी जांच की जाय . . . (व्यवधान) । यह हंसने की बात नहीं है। यह दवा एम० पी० ज० को दी जाती है और ये स्टाक कम्पनी की दवा है. . . (व्यवधान)। इस प्रकार की दवा एम० पी०ज० को दी जाएगी तो आम लोगों को कैसी दवा दी जाएगी ?

उपसभापति : आप इस विषय पर मंत्री जी से बात करिये। अभी आप एडवर्स ईफेक्ट आन मैनेजमेंट आफ कोल पर कुछ कहना चाहते हैं तो कहिये. . . (व्यवधान)। वे कोल के बारे में बोलना चाहते हैं।

Adverse Effect of Mismantgement of Coal Industry on the economy

श्री राम अवधेश सिंह (बिहार) : महोदया मैं कोल इंडस्ट्री के कुप्रबंध के बारे में सरकार और सदन का ध्यान खींचना चाहता हूं। महोदया यह एक ऐसा सेक्टर है, ऐसा उद्योग है जिसका असर सारी अर्थ-व्यवस्था पर पड़ता है । जब मिस-मैनेजमेंट होता है तो घाटा होता है और उस घाटे के पूर्ति के लिए हमें जनता पर टैक्स लगाना पड़ता है और फिर भी वे उसकी कीमत बढ़ाते जाते हैं। क्योंकि यह की-प्रोडक्ट है एनर्जी इससे बनती है, इसलिए कोयले की कीमत बढ़ने से सारी चीजों की उत्पादन लागत बढ़ जाती है। इसलिए इस पर हमारा और देश का ध्यान जाना चाहिए। लेकिन भारत सरकार का ऊर्जा मंत्रालय और स्टील मंत्रालय दोनों मिलकर इसको इस ढंग से चला रहे हैं कि वहां स्थानीय प्रबंध जो बी.सी.सी.एल. और ईस्टर्न कोल्ड फील्ड का है इन कंपनियों के कार्यों को हमने नजदीक से देखा है। बी.सी.सी.एल. और सी.सी.एल. जिनके मुख्यालय रांची और धनबाद में हैं और जिनका कार्यक्षेत्र बिहार में हैं उनके कार्य को हमने देखा है। महोदया आपको जानकर आश्चर्य होगा कि प्रोडक्शन बढ़ता है लेकिन फिर भी घाटा बढ़ता जाता है। इसका उत्पादन 1987-88 में 26.11 मिलियन टन हुआ और 1988-89 में 2 .30 मिलियन टन हुआ। इस तरह से उत्पादन 1.19 मिलियन टन बढ़ गया। लेकिन फिर भी उसकी कीमत बढ़ाई गई और 100 रुपये टन कोयले की कीमत बढ़ाई गई। तो 26.30 मिलियन टन जब उत्पादन हुआ और 100 रुपये प्रति टन कीमत बढ़ गई तो 260 करोड़ रुपये अपने आप कीमत से बढ़ गया। लेकिन 260 करोड़ रुपया आमदनी बढ़ने के बावजूद घाटा बढ़कर 290 करोड़ रुपये से 300 करोड़ रुपये हो गया। 290 करोड़ रुपये जब घाटा था जब दाम नहीं बढ़े थे जब उत्पादन था 25.11 मिलियन टन उस समय घाटा 290 करोड़ रुपया था। लेकिन जब कोयला का उत्पादन 1.19 मिलियन टन बढ़ गया और साथ ही साथ दाम बढ़ गये और 290 करोड़ रुपये की आमदनी बढ़ गई तो इसके बावजूद इसका घाटा बढ़ गया। इसका क्या कारण है? इन कारणों की ओर मैं आपका ध्यान खींचना चाहता हूं। महोदया ये लोग झूठा प्रोडक्शन दिखाते हैं। ओपन कास्ट माइनिंग में खर्चा कम पड़ता है और अंडर माइनिंग में ज्यादा पड़ता है। लेकिन बावजूद इसके इनका खर्च बढ़ता ही जाता है। वे ओपन कास्ट में यह दिखाते हैं कि हमारा प्रोडक्शन बहुत बढ़ गया। जैसा कि 1987-88 में 11.33 मिलियन टन फिर 89 में 11.92 मिलियन टन इनका हो गया। महोदया मुझे जानकारी है कि पत्थर के टुकड़ों के ढेर पर कुछ कोयला डाल देते हैं और डालकर उसको मोप करवाते हैं। अगर वह हजार टन होता है तो उसको 5 हजार टन दिखाते हैं। इस तरह देश की जनता और सरकार को कोल इंडिया के आफिसर बेवकूफ बनाते हैं और असल कोल जो होता उसको बिकवा देते हैं और इस प्रकार वे

लूटते हैं। इस संबंध में महोदया, मैं एक बात कहना चाहता हूं। कोल इंडस्ट्री में टाटा को स्टील प्लांट चलाने के नाम पर दो जगह कोयला दी गई है हालांकि सारी कोल इंडस्ट्री इंडस्ट्रियलाइज्ड है भारत सरकार के जरिए।

उपसभापति : इंडस्ट्रियलाइज्ड नहीं नेशनलाइज्ड कहिये।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह म्रहलुवालिया (बिहार) : हिन्दी में वोट मांगते हैं इसलिए हिन्दी शब्द बोलिये **(व्यवधान)**

श्री राम म्रवधेश सिंह : म्राप बीच में मत बोलिये, ठीक है यह जो राष्ट्रीयकृत खदाने हैं **(व्यवधान)**

श्री रऊफ वलीउल्लाह (गुजरात) : म्रब पता चला बीच में बोलने का।

उपसभापति : राम म्रवधेश जी म्रब बदल गये हैं। म्रब वह कभी किसी के बीच में नहीं बोलेंगे।

श्री राम म्रवधेश सिंह : यह लोग जो टाइम ले रहे हैं यह टाइम मेरे टाइम से मत काटियेगा **(व्यवधान)**

उपसभापति : म्राप इनके बीच में मत बोलिये। यह म्रापके बीच में नहीं बोलेंगे।

श्री राम म्रवधेश सिंह : टाटा को जो स्टील इंडस्ट्री चलाने के लिए खदाने दी गई हैं उन में जितना उत्पादन होता है उसका 30 प्रतिशत से ज्यादा टाटा म्रपने टिस्को के उत्पादन में नहीं लगाता है बाकी 70 प्रतिशत रिजेक्टेड कोयले के नाम पर, मिडलिंग कोयले के नाम पर बाहर बेच दिया जाता है और इस तरह से यह भारी मुनाफा कमाते हैं। इस प्रकार से यह भारत सरकार म्रौर बिहार सरकार को ठगते हैं। महोदया, रिजेक्टेड कोयले के नाम पर **(समय की घंटी)** ग्रेड ए, ग्रेड बी, ग्रेड सी, ग्रेड डी के कोयले को वह बेचते हैं म्रौर भारी मुनाफा कमाते हैं। महोदया, बिहार सरकार को भी ठगते हैं इसमें चूंकि रायल्टी म्राठ म्राने प्रति टन देनी पड़ती है वास्तव में इस म्रच्छी क्वालिटी के कोयले की रायल्टी की दर 6 रुपये प्रति टन, साढ़े चार रुपये प्रति टन है म्रौर टाटा म्राठ म्राने प्रति टन रायल्टी बिहार सरकार को देता है। इस तरह से हमारा नुकसान हो रहा है। मैं चाहूंगा कि कोल इंडस्ट्री का नेशनलाइजेशन कर दिया जाए म्रौर टाटा को कुछ भी स्टील इंडस्ट्री चलाने के नाम पर नहीं दिया जाए। वहां एक म्रौर घपला हुम्रा है। वहां पिछले साल एक मर्डर हो गया था। वेस्ट बोकारो कोलेरी जो टाटा के जरिये चलती है वहां वाशरी है। कोयले की धुलाई करने के बाद जो धूल का कोयला होता है उसको बेचने में इन्होंने इतनी म्रापाधापी की है कि वहां के स्थानीय मजदूरों ने हंगामा किया म्रौर प्रबन्धन ने वहां पर म्राठ व्यक्तियों की सामूहिक हत्या कराई। मैंने इस सवाल को इस सदन में उठाया था इसका नतीजा यह निकला कि जिसको यह ठेका दिया गया था कोयले की धूल को उठाने का वह रद्द कर दिया गया। फिर एक प्राइवेट म्रादमी को दिया गया बाहर के म्रादमी को दिया गया, फिर इस पर हंगामा हुम्रा वह रद्द कर दिया गया। म्रब की बार म्रापको जान कर म्राश्चर्य होगा कि फिर बिहार के बाहर से काश्मीर से बुला कर जो प्रणव मुखर्जी का म्रादमी है या फोतेदार का म्रादमी है **(व्यवधान)**

उपसभापति : म्राप किसी का नाम मत लीजिए।

श्री राम म्रवधेश सिंह : ठीक है नाम नहीं लेता हूं उनके म्रादमी को ठेका दिया गया।

उपसभापति : म्राप म्रपनी बात करिये।

श्री राम म्रवधेश सिंह : ठीक है वह काश्मीर की ट्रिकान कम्पनी को दिया गया। स्थानीय म्रादमी को नहीं दिया गया। इसका नतीजा यह है कि वहां एक भयानक बवण्डर खड़ा होने वाला है भारी मारकाट की

[श्री राम अवधेश सिंह]

संभावना है। मैं आपको इत्तेला देना चाहता हूं कि ट्रिकान कम्पनी का ठेका रद्द नहीं किया गया तो मैं समझता हूं कि एक हफ्ते के अन्दर वहां भारी हंगामा होगा और और खूनखराबा होगा। इसलिये मैं इस सदन के माध्यम से कोल मिनिस्टर, इनर्जी मिनिस्टर का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं और यह मांग करता हूं कि प्रधान मंत्री को भी इसमें हस्तक्षेप करना चाहिये। अगर फिर हंगामा होता है, फिर हत्या होती है तो इसके लिये सरकार की जवाबदेही होगी, इसलिये इस ठेके को रद्द किया जाना चाहिये **(समय की घंटी)**

उपसभापति : राम अवधेश जी आपको 10 मिनट दे दिये हैं इसलिये अब आप बैठ जाइये।

श्री राम अवधेश सिंह : बस एक मिनट और दे दीजिये। एक बहुत इम्पॉर्टेंट बात छूट गई है। बी०सी०सी०एल० और सी०सी०एल० दोनों कम्पनियां स्थानीय उद्योगपतियों या स्थानीय एंसीलियेरी यूनिट्स से सामान नहीं खरीदते हैं बल्कि वह सामान बाहर से खरीदते हैं बंगलौर से खरीदते हैं हरियाणा से खरीदते हैं। अगर दो सौ करोड़ का सामान बाहर खरीदा जाता है तो दो करोड़ का सामान बिहार से खरीदते हैं। इसका नतीजा होता है कि स्थानीय एंसीलियेरी जो कम्पनियां हैं वह बेमौत मर रही हैं। बिहार के साथ इतना भारी अन्याय होता है कि जो हम स्माल स्केल इंडस्ट्री भी खड़ी करते हैं.. **(समय की घंटी)** तो वह बेमौत मारी जाती हैं। मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि यह निर्देश दिया जाय कि जो बी०सी०सी०एल० एपरेटस और इक्विपमेंट्स जो भी खरीदे वह बिहार के एंटरप्रेन्योर्स से ही खरीदे और साथ-साथ .. **(समय की घंटी)** महोदया, एक मिनट

उपसभापति : अब आप बैठ जाइये।

श्री राम अवधेश सिंह : वहां जो कोल माफिया है...

उपसभापति : राम अवधेश सिंह जी शायद आप समझते नहीं हैं। आपको इतना समय दे दिया है। अब आप कृपया स्थान ग्रहण कर लीजिये। आप ज्यादा बोलेंगे तो रिकार्ड में तो आता नहीं है। जितना बोल लिया है उतने से ही काम हो जाये तो ठीक है।

श्री राम अवधेश सिंह : जो माफिया लोग कोल में थे उन माफिया...

उपसभापति : अब हो गया।

श्री राम अवधेश सिंह : बस कन्क्लूड करने दीजिये। जो कोल की माफिया है उन्हीं के रिश्तेदारों को ढेला उठाने का ठेका, कोल उठाने का ठेका, अभी भी बी० सी० सी० एल० से दिया जा रहा है और यहां सरकार को बताया जा रहा है कि, वहां हम लोगों ने माफिया को खत्म कर दिया है। हालांकि वहीं पर लोगों को दिया जाता है। इनकी ठेकेदारी रद्द करायी जाये अन्यथा वहां फिर बवण्डर होने वाला है। धन्यवाद।

THE DEPUTY CHAIRMAN : Now we take up the Discussion on the Ministry of Information and Broadcasting.

SHRI ANAND SHARMA (Himachal Pradesh) : Madam, I have given a Special Mention notice for non-execution...

(Interruptions)

THE DEPUTY CHAIRMAN : Please sit down. One person at a time. *(Interruptions)*

SHRI ANAND SHARMA : I should be heard.

THE DEPUTY CHAIRMAN : I have identified Mr. Anand Sharma. One person should speak at a time. I cannot hear so many vociee at one time. Let one person speak

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश) : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है... **(व्यवधान)** जिस विषय पर आपने आनन्द शर्मा जी को बोलने के लिये खड़ा किया

है.. (व्यवधान) उन्होंने कोई आपसे लिखित अनुमति मांगी है ? मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि श्री आनन्द शर्मा ने कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं उठाया है। जो विषय उठाने जा रहे हैं उस संबंध में कोई लिखित सूचना दी है ?.. (व्यवधान)

उपसभापति : मालवीय जी, मुझे सुनने तो दीजिये कि क्या कह रहे हैं।

I asked Mr. Anand Sharma to say whatever

व्यवस्था का

he wants to say.

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA : Shri Anand Sharma has never said: "व्यवस्था का प्रश्न"

SHRI ANAND SHARMA: I am quite surprised to see this attitude of these persons.

THE DEPUTY CHAIRMAN : Is this a point of order ?

SHRI ANAND SHARMA : What I am trying to say is that I have given a notice for a Special Mention drawing the attention of this House to a very important matter. *(Interruptions)* It is about Mr. V. P. Singh. I have got the details of the file Orders were passed on his behalf not to arrest the smugglers for six months. It is the double standard of the opposition. *(Interruptions)* The paragon of virtue stands exposed. *(Interruptions)*

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA : It was not allowed by the Chairman.

उपसभापति : अपना स्थान ग्रहण करेंगे कृपया.. (व्यवधान) आप बैठ जाइये।

I have identified one person.

SHRI RAOOF VALIULLAH : Madam, we want a full-fledged discussions on this. Some people are sheltering economic offenders....

SHRI ANAND SHARMA : Like V. P. Singh. He is in politics.

.. क्या व्यवस्था का प्रश्न है ... (व्यवधान) यह वेल्यु-बेस्ट पालिटिक्स वाले हैं... (व्यवधान) यह क्लीन पालिटिक्स वाले हैं... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN; Mr. Anand Sharma, will you please" sit down? I want everybody to sit down.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: मेरा व्यवस्था का सवाल है।.. (व्यवधान) इस पर चर्चा की जरूरत है। (व्यवधान) जब वित्त मंत्रालय में थे तब भी ऐसा ही किया .. (व्यवधान) स्मगलर्ज को प्रोटेक्शन देते हैं.. (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN : I ask everybody to sit down. Please sit down. .' *(Interruptions)* Mr. Valiullah, Mr. Ahluwalia, please sit down. May I request everybody to please take their seats ?

SHRI RAOOF VALIULLAH : Madam, will you consider a special discussion on this ? It is a very serious matter.

THE DEPUTY CHAIRMAN : Okay. You allow me to say something Please sit down.

(Interruptions)

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA : The Chair has already ruled it out. You cannot take the House for a ride. It was rejected by the Chairman. *(Interruptions)*

SHRI ANAND SHARMA : He is your leader. He is guilty of these things. He stands exposed.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : सच्चाई कड़वी होती है। .. (व्यवधान)

उपसभापति: आपने स्पेशल मेंशन के लिये परमिशन मांगी है। प्लीज आप बैठ जाइये।

[Deputy Chairman]

Please sit down. *(Interruptions)* I will allow you, I will allow everybody. If I do not hear, I cannot give my decision also. So, now I have heard what he is saying It is some Special Mention Mr. Anand Sharma has given notice of. It is before the Chairman. He will see whether it should be allowed or not, whether it should be half-an-hour discussion or no discussion. That is the discretion of the Chairman. *(Interruptions)*

आपको हाऊस में थोड़ा तो सब्र का इस्तेमाल करना चाहिये । आप इतने उतावले क्यों रहते हैं ?...(व्यवधान)

SHRI ANAND SHARMA : Madam, it should be permitted.

(Interruptions)

THE DEPUTY CHAIRMAN : It is very unfortunate that I am on my legs and you people do not abide by the rule. Please sit down. When I say please sit down, please sit down. *(Interruptions)*

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: They are defying your ruling. Therefore, they stand exposed.

उपसभापति : मालवीय जी, आप कृपया बैठ जाइये ।

Please sit down. *(Interruptions)* I am on my legs. Please sit down.

ठाकुर जगतपाल सिंह (मध्य प्रदेश) : आप अपने चेहरे को शीशे में जाकर देखिये। ...(व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN : Now the discussion on the working of the Ministry of Information and Broadcasting—Shri Vishwa Badhu Gupta.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : आप इस पर गौर करेंगी कि नहीं करेंगी ?

डा० रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश) : इस पर आधे घंटे की बहस होनी चाहिये । ग्यारह मुजरिमों को कोफेपोसा में... (व्यवधान)

उपसभापति : आप मैंने कहा है कि बैठ जाइये ।

I have called him to speak.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : महोदया, इससे भी जरूरी कोई मुद्दा हो सकता है ? जब मुल्क की एक राष्ट्रीय गाड़ी चलाने वाले...(व्यवधान)

SHRI RAOOF VALIULLAH : Kindly consider a discussion on *this,*

SHRI ANAND SHARMA : My notice on Special Mention should be considered. Thats all.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : महोदया, आप कम से कम एश्योरेंस तो दें कि इस पर विचार होगा ।

उपसभापति : मैंने आपसे कहा कि आनन्द शर्मा ने स्पेशल मेंशन का नोटिस दिया है । चेयरमैन साहब उस पर विचार करेंगे कि क्या करना चाहिये । उस पर वह आपको जवाब दे देंगे ।

I cannot give you an assurance just now until and unless the Chairman gives permission. Please sit down,

SHRI CHIMANBHAI MEHTA (Gujarat) : Madam, I am on a point of order. *(Interruptions)* Madam, I want to rise on a point of order. *(Interruptions)*

1.00 p.m.

THE DEPUTY CHAIRMAN : Now the matter is closed. Please sit down. I will now allow anybody to refer to it any more. *(Interruptions)*

SHRI CHIMANBHAI MEHTA : You cannot waste the time of the House...

THE DEPUTY CHAIRMAN : Nothing will go on record, what he says.

SHRI ANAND SHARMA : Do you know what lie says ?

THE DEPUTY CHAIRMAN : Do not react to anybody and what he says is not being recorded.

SHRI CHIMANBHAI MEHTA : I am rising on a point of order.

THE DEPUTY CHAIRMAN : I am not allowing anybody. *(.Interruptions)* If you do not sit down, I will adjourn the House for lunch. If you do not abide by the Chair's ruling.. .

(व्यवधान) बैठ जाइये आप । जब मैंने एक दफा कह दिया है,

When I am on my legs, do not get up. *(Interruptions).* If somebody is making a mistake, you do not make it. Now, please all sat down.

Yes, Shri Vishwa Bandhu Gupta.

DISCUSSION ON THE WORKING OF THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING

SHRI VISHWA BANDHU GUPTA (Delhi) : Madam Deputy Chairman, I rise to support the demands of the Ministry of Information and Broadcasting. It is a truism to say. . .

उपसभापति : कोई बात नहीं हो सकता है कि वह कभी डिमांड के ऊपर भी डिसकस करें। एक दिन वह लोकसभा के मेम्बर भी बन सकते हैं तब वह डिमांड के ऊपर डिसकस करें और यह भी हो सकता है कि राज्य सभा में भी कोई डिमांड डिसकस हो। इसलिये हो जाने दीजिये कोई बात नहीं।

SHRI VISHWA BANDHU GUPTA : It is a truism to say and I hasten to say it briefly that this is one of the most important Ministries that has the potential in it of moulding the mind, heart and soul of our people either to good and noble ways or to base, ignoble self-destructive ways.

Madam, we shall assume that it is the good that we are after though Heaven knows and I say this in all sincerity and without taking a partisan side that the ■way in which some things are done by the Ministry must give rise to grave misgivings. But before I take a step further, I must say quite emphatically that the vast army of men and women who are engaged in the nuts and bolts of the working of the various departments and wings of this Ministry are sincere and dedicated people striving to the utmost in a difficult environment to do their best.

Why then, in the face of this effort, eapecially when we consider that most of it comes from young people still uneontaminated by cynicism, and brimming with enthusiasm and bursting to reach the peak of achievement, should we appear to fall short of our aims and targets?

Madam, at this stage, I must affirm quite firmly that it is extremely unfair of our enormous critics and commentators to go harping on the so-called superiority of foreign, and they always mean Western, media over ours. Anyone who sees dispassionately the objective conditions in terms of cultural linguistic complexity, the diversity, the financial resources, technological facilities, the atmosphere, environment, work ethic and even climatic factors, will have to admit that our people work under very difficult adverse circumstances. The almost miraculous thing is that in this situation, they deliver some kind of goods. Can one imagine what would happen if the whole of Western Europe, which is much smaller than India, were put together in one cauldron and have an all-Europe system having to deal with conflicting and diverse claims. It would not despite its developed status stand for a minute. But India struggles and exists. Our task is to carry it forward.

I am not saying that we should be complacent because of this. On the contrary, we should make a determined assault, a ceaseless determined assault, to find out the inhibiting causations for this state of affairs. Obviously, the problem lies elsewhere, perhaps the higher reaches of policy making and policy decisions.

Madam, the most striking thing is that for our policy makers and our decision takers there is no dearth of advice, per-